आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

प्रसार शिक्षा निदेशालय

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बीकानेर

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 3 अंक : 2 बीकानेर, अक्टूबर, 2015 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति की कलम से.....

बेटा-बेटी को पढ़ाने से ही तरक्की की राह खुलेगी- राज्यपाल

प्रिय पशुपालक और किसान भाईयों!

हमारे लिए इस बार अत्यंत हर्ष की बात है कि राज्यपाल और राजुवास के कुलाधिपति श्री कल्याणसिंह जी ने 15, 16 व 17 सितम्बर 2015 को अपने तीन दिन के बीकानेर प्रवास में राजुवास के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया और अपनी यात्रा के अंतिम दिन डाइयां गांव में जाकर गांववासियों और पशुपालकों से सीधा संवाद किया। ये उनकी ग्रामवासियों के प्रति संवेदना और ग्राम विकास की प्रतिबद्धता का परिचायक है। उन्होंने बीकानेर की नाल ग्राम पंचायत के डाइयां गांव का 17 सितम्बर, 2015 को दौरा किया और वहां आयोजित पशुपालक सम्मेलन में ग्रामवासियों से रूब-रू हुए। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए 'डाइयां' को एक आदर्श गांव के रूप में विकसित किया जा रहा है। राज्यपाल एवं कुलाधिपति ने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि शिक्षा जरूरी है अतः हर एक बेटा और बेटी को पढ़ाने से ही तरक्की की राह खुलेगी और हम दुनिया की दौड़ में आगे बढ़ पाएंगे। उन्होंने कहा कि वे स्वंय गांव के और किसान के बेटे हैं अतः यहां आकर उन्हें अपनत्व महसूस होता है। राज्य के सभी विश्वविद्यालयों को एक-एक गांव गोद लेने के निर्देश दिये गए हैं। उन्होंने कहा कि ग्रामीणों द्वारा बताई गई समस्याओं का निराकरण करवाया जाएगा। जिला स्तर की समस्याएं दर्ज की गई हैं। राज्य स्तर पर समाधान होने वाली समस्याओं के निराकरण के लिए भी वे निर्देश देंगे। इससे पूर्व राज्यपाल ने ग्रामवासियों से एक-एक कर उनकी समस्याएं सुनी। उन्होंने ग्रामीणों से ही गांव में शिक्षा, चिकित्सा, बिजली, पानी, सड़क, परिवहन, पशुओं की संख्या और उत्पादन, शौचालयों की स्थिति तथा ग्रामीणों के जीवन स्तर के बारे में सभी जानकारियां प्राप्त की। राज्यपाल ने कहा कि विज्ञान का युग है, जमाना तेजी से आगे बढ़ रहा है, अतः पढ़ लिखकर ही हम इस रफ्तार में शामिल हो सकते हैं। योजनाओं का लाभ अब गांवों तक भी पहुँचा है। तरक्की के लिए हमें भी अपना योगदान देना है। कुलाधिपति ने आशा जताई कि वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए डाइयां गांव में कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत की दूरदर्शिता और नेतृत्व क्षमता से यहां भी बदलाव महसूस किया जाएगा। इस गांव का सर्वे कार्य पूरा हो गया है और पिछले दो माह से गांव में स्वच्छता, पशुचिकित्सा, पशुपालकों के प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गए हैं। बीकानेर सहित जयपुर और वल्लभनगर (उदयपुर) परिसरों द्वारा दो-दो गांवों को गोद लेकर 'स्मार्ट विलेज' रूप में विकसित करने के लिए विश्वविद्यालय जनप्रतिनिधियों, प्रशासन, औद्योगिक संस्थानों तथा सम्बद्ध संस्थानों का सहयोग प्राप्त कर विकास के लिए समन्वित प्रयास करेगा। हम सब माननीय राज्यपाल के ग्रामीण विकास के सपने को पूरा करने के लिए मिलकर कार्य करेंगे तो उसके सार्थक परिलाभ मिल सकेंगे।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।

मुख्य समाचार

वेटरनरी विश्वविद्यालय का प्रथम दीक्षांत समारोह

राज्यपाल एवं राजुवास के कुलाधिपति श्री कल्याण सिंह ने 16 सितम्बर को विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह में पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान की 1127 उपाधियां प्रदान कर 57 छात्र–छात्राओं को स्वर्ण पदकों से नवाजा। 917 स्नातक, 199 स्नातकोत्तर और 11 विद्यार्थियों को विद्या–वाचस्पति की उपाधियां प्रदान की गई। विश्वविद्यालय परिसर में सेना बैंड की स्वरलहरियों के बीच दीक्षांत शोभा यात्रा के पंडाल में प्रवेश के बाद कुलाधिपति की अनुमति से दीक्षांत समारोह शुरू हुआ। दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता करते हुए राज्यपाल एवं कुलाधिपति ने अपने सम्बोधन में कहा कि दीक्षांत एक ऐतिहासिक अवसर होता है जिसके पीछे विश्वविद्यालय का सपना, प्रतिबद्धता नवाचार के साथ शिक्षकों, कर्मचारियों व विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत होती है। डिग्रियां प्राप्त करने वाले विद्यार्थी राज्य के साथ ही राष्ट्र के लिए एक महत्वपूर्ण मानव संसाधन हैं। भारत एक ऋषि और कृषि प्रधान देश है। कृषि और पशुपालन का गहरा संबंध है जो किसान की जिंदगी और मौत से जुड़ा है। राज्य के लगभग 70 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों की आय का साधन पशुपालन है अतः पशुचिकित्सक सेवा भाव को लेकर अपने कार्य क्षेत्र में जाएं और पशुपालकों के लिए कार्य करें। यह विश्वविद्यालय पशुपालन के क्षेत्र में विकास के लिए अनुसंधान और प्रसार का कार्य तीव्र गति से कर रहा है। उन्होंने वेटरनरी विश्वविद्यालय के ई–मॉडल के लिए सभी को बधाई देते हुए कहा कि यह एक आदर्श प्रयास है जिसे राज्य के सभी विश्वविद्यालयों को लागू करना चाहिए। राज्यपाल ने कहा कि कृषक देश का उत्पादक और बड़ा उपभोक्ता भी है अतः कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार जरूरी है। अतिवृष्टि, ओलावृष्टि, अनावृष्टि, ओला–पाला और खेतिहर रोगों से कृषक को बचाने के लिए उसकी फसलों और पशुओं का बीमा करवाया जाना चाहिए। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने दीक्षांत समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि राजुवास अपनी स्थापना के अल्पकाल में शैक्षणिक, अनुसंधान और प्रसार शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक तकनीक और कार्यप्रणाली का समावेश करके आगे बढ़ रहा है। विश्वविद्यालय का दो तिहाई कार्य पूरी तरह से ई–गर्वनेन्स के तहत किया जाकर पांच वर्षों में आर्थिक संसाधनों में 900 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि की है। इस अवधि में अनुसंधान केन्द्रों की संख्या 5 से बढ़कर 8 हो गई है तथा प्रसार शिक्षा के लिए 10 जिलों में पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण और अनुसंधान केन्द्र शुरू किये गए हैं। जहां पहले 9–10 प्रोजेक्ट चल रहे थे, वहां अब 45 अनुसंधान परियोजनाएं संचालित की जा रही हैं। विश्वविद्यालय ने पिछले पांच वर्षों में स्नातकोत्तर स्तर की सीटों को दो गुना तथा पीएच.डी. की सीटों को तीन गुना अधिक कर दिया है। मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उपमहानिदेशक (कृषि शिक्षा) डॉ. एन.एस. राठौड़ ने अपने दीक्षांत भाषण में कहा कि

पशुचिकित्सा क्षेत्र में कार्य करने की विपुल संभावनाएं मौजूद हैं। विश्वविद्यालय से निकलने वाले छात्र के जीवन में 4–टी ट्रेडिशन (परंपराओं से), टेक्नोलॉजी (तकनीक), टेलेन्ट (हुनर) और ट्रेनिंग (प्रशिक्षण) का विशेष महत्व है। अंतिम टी तक पहुँचकर पशुपालकों और कृषकों की सेवा करनी है। डॉ. राठौड़ ने कहा कि देश के 73 राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में अपने कार्यों और दूरदर्शिता से आगे बढ़ते हुए राजुवास ने अग्रणी स्थान बनाया है। दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि रूप में भारतीय पशुचिकित्सा परिषद्, नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा ने नव दीक्षित पशुचिकित्सा छात्रों का आह्वान किया कि समाज के पिछड़े और कमजोर वर्ग को पशुपालन से ऊपर लाने के लिए काम करें। खेती में मुनाफे के लिए पशुपालन महत्वपूर्ण है अतः इसके लिए कार्य कर कृषकों की पीड़ा को कम करने के लिए अपना योगदान दें। दीक्षांत समारोह में विशिष्टि अतिथि राज्यपाल के विशेषाधिकारी श्री अजय शंकर पाण्डे शामिल हुए। इस पहले दीक्षांत समारोह को विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर सीधा प्रसारित किया गया जिसे देश–विदेश में बैठे लोगों ने भी देखा। समारोह स्थल पर भी एल.ई.डी. की बड़ी स्क्रीन पर दीक्षांत समारोह का सीधा प्रसारण किया गया।

पशुपालन प्रदर्शनी का राज्यपाल ने किया उद्घाटन

राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कल्याण सिंह ने डाइयां गांव में 17 सितम्बर, 2015 को विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का विधिवत् उद्घाटन किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से सेवण घास की पौध, खनिज लवण मिश्रण, हरा चारा संरक्षण के लिए साइलो बैग तकनीक, भेड़–बकरी के बालों से बने उत्पादों तथा अन्य पशुचिकित्सा तकनीक की जानकारी दी। प्रदर्शनी में एमू का अंडा (करीब 450 ग्राम) कौतूहल बना रहा। प्रदर्शनी में विश्वविद्यालय की गतिविधियों और अनुसंधान को रंगीन चित्रों, पैनल, मॉडल के रूप में प्रदर्शित किया गया। दो दिवसीय प्रदर्शनी का ग्रामीणों ने बड़ी संख्या में अवलोकन किया।

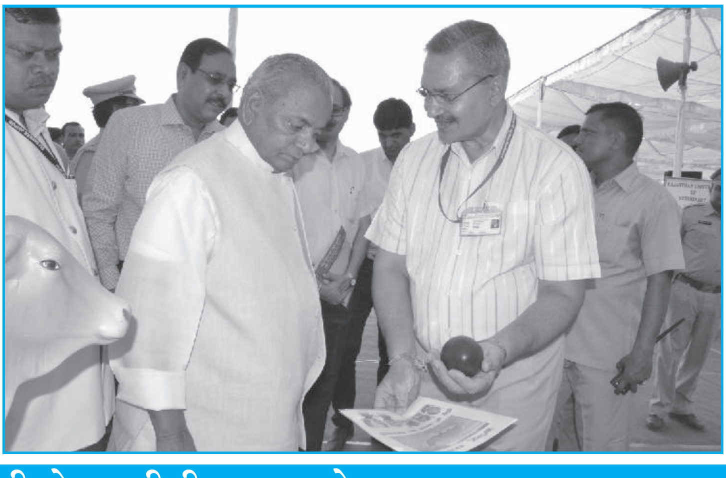

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

खींवासर (चूरू) में पशु स्वास्थ्य शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 8 सितम्बर को ग्राम खींवासर में पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। केन्द्र प्रभारी डॉ. राजेश सिंगाठिया ने पशुपालकों को टीकाकरण, कृमिहरण, खनिज लवणों की उपयोगिता, स्वच्छ दूध उत्पादन की प्रक्रिया व मूलभूत विषयों के बारे में 20 पशुपालकों को विस्तृत जानकारी दी।

देवरी (चित्तौड़गढ) में पशु नस्ल सुधार पर प्रशिक्षण

चित्तौड़गढ़ जिले के देवरी गांव में 9 सितम्बर को पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजून्दा द्वारा पशु नस्ल सुधार पर एक दिवसीय पशुपालक शिविर का आयोजन किया गया। डॉ. मनीष अग्रवाल ने कहा कि नस्ल सुधार कर ही पशुधन उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। नस्ल में सुधार के लिए पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान या उन्नत नस्ल के सांडों का उपयोग किया जाना चाहिए। बकरियों में नस्ल सुधार कार्यों के लिए अच्छी नस्ल के बकरों के लिए पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बोजून्दा से संपर्क किया जा सकता है।

सूरतगढ़ में महिला पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

आत्मा योजनान्तर्गत पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ में 10 सितम्बर को महिला पशुपालकों का प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में पशुपालन सहित कृषि,उद्यान एवं बीज के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। कृषि विभाग से श्री शायरसिंह (कृषि पर्यवेक्षक) एवं बाल विकास विभाग से अनीता चौधरी ने विभिन्न योजनाओं के बारे में अवगत कराया। प्रभारी अधिकारी डॉ. अशोक बेंदा ने 42 महिला पशुपालकों को डेयरी व्यवसाय एवं चारे के संरक्षण विषय के बारे में अवगत करवाया।

जसवन्तगढ के पाबोलाव पशु मेले में प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया (लाडनूं) द्वारा जसवंतगढ़ गांव के पाबोलाव पशु मेले में 19 सितम्बर, 2015 को पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। पशु मेले में ऊंटों की भारी संख्या में उपस्थिति को देखते हुए पशुपालकों को ''ऊंट–पालन'' विषय पर प्रशिक्षण दिया गया। शिविर में डॉ. कमल पुरोहित ने पशुपालकों को ऊंटों के आहार, आवास, प्रजनन व नवजात टोडियों के रख–रखाव की जानकारी देने के साथ साथ ऊंटनी के दूध के आर्थिक महत्व से अवगत करवाया।

राजपुरा (सिरोही) में प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 21 सितम्बर को ग्राम राजपुरा में पशु प्रबंधन एवं पशु पालन के क्षेत्र में आधुनिक तकनीक अपनाने बाबत विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.के. धूड़िया ने पशुपालकों को उनकी समस्याओं के निस्तारण के लिए मोबाइल पर एस.एम.एस. सलाहकारी सेवा की जानकारी दी। केन्द्र प्रभारी डॉ. सुदीप सोलंकी ने पशुपालन के क्षेत्र में आधुनिक तकनीक अपनाने एवं उनसे होने वाले फायदों से अवगत करवाया। शिविर में 34 पशुपालकों ने भाग लिया ।

चन्देसल (कोटा) में पशुपालन विकास पर प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 24 सितम्बर को ग्राम चन्द्रेसल (कोटा) में पशुपालन विकास हेतु मुख्य तकनीकें विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। केन्द्र प्रभारी डॉ. अतुलशंकर अरोड़ा ने पशुपालकों को हरे चारे के संरक्षण सहित विभिन्न विषयों कीं जानकारी दी। प्रशिक्षण शिविर में 25 पशुपालकों ने भाग लिया ।

सुनारी (भरतपुर) में पशुपालक गोष्ठी

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा गांव सुनारी में 29 सितम्बर को पशुपालक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में केन्द्र प्रभारी डॉ. सुभाषचन्द्र द्वारा पशुपालकों को पशुओं के बांझपन एवं मद में न आने के कारणों एवं उनके निराकरण बाबत जानकारी दी गई।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अक्टूबर, 2015

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	बाँसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनू, धौलपुर, सवाईमाधोपुर, अलवर, अनूपगढ
गलघोंटू	भैंस, गाय	धौलपुर, जयपुर, सवाईमाधोपुर, दौसा, टौंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, श्रीगंगानगर, उदयपुर, अलवर
ठप्पा रोग	भैंस	अनूपगढ़, जयपुर, बीकानेर
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस	गाय	सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
फड़किया रोग	बकरी, भेड़	सवाईमाधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, सीकर, बीकानेर, हनुमानगढ़
भेड़ो में एन्जूटिक गर्भपात	भेड़	बीकानेर, नागौर
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़	हनुमानगढ़, बीकानेर, चूरू, झुंझुनू, सीकर, सवाई माधोपुर
चेचक	बकरी, भेड़	जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर
सर्रा	ऊंट, भैंस,	बांसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, झालावाड
थाइलेरिओसिस एवं बेबीसियोसिस	भैंस, गाय	बांसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, अनूपगढ़, सवाईमाधोपुर
पर्ण–कृमि	ऊंट, भैंस, गाय, भेड़, बकरी	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बांसवाड़ा, सवाईमाधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, सीकर
गोल–कृमि	भैंस, बकरी, गाय	धौलपुर, सवाईमाधोपुर, सीकर, अलवर, भरतपुर
फीता–कृमि	भैंस, बकरी, गाय	धौलपुर, सीकर, भरतपुर
खुजली	ऊंट	झुंझुनू, बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर

मुर्गियों में कोरायजा, माइकोटोक्सीकोसिस व रानीखेत रोग होने की सम्भावना हैं। पशुपालकों से निवेदन है कि इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें– प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर । फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

।। कोई व्यक्ति अपने कार्यो से महान होता है, अपने जन्म से नहीं ।।

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशुचिकित्सा सूक्ष्म जीव–विज्ञान एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग

वेटरनरी विश्वविद्यालय के इस विभाग की स्थापना वेटरनरी कॉलेज बीकानेर के तहत की गई जहां से पहला स्नातकोत्तर छात्र सन् 1958 में दीक्षित हुआ। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा 1965 में इस विभाग को पशुचिकित्सा सूक्ष्म जीव–विज्ञान में विद्यावाचस्पति की उपाधि के लिए मान्यता प्रदान की गई। यह विभाग तब से राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सूक्ष्म जैव विज्ञान के विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीक और विज्ञान में प्रशिक्षित कर रहा है। विश्वविद्यालय परिसर में यह विभाग आधुनिक रूप में निर्मित एक भवन में संचालित हो रहा है जो केन्द्रीयकृत वातानुकूलित है। इसमें जीवाणु विज्ञान, विषाणु विज्ञान, इम्यूनोलॉजी, आणविक जैविकी और बॉयोइन्फरमेटिक्स की स्नातकोतर शिक्षण की प्रयोगशालाएँ हैं। यहां जीनोमिक्स और प्रोटीनोमिक्स में अनुसंधान कार्यो के लिए उच्च स्तरीय सुविधाएँ हैं। विभाग में पी.सी.आर, और बॉयो–एनालाईजर जैसे उन्नत उपकरण हैं। जिससे डी.एन.ए, आर.एन.ए. और प्रोटीन की विश्लेषण गुणवता और क्वान्टीफिकेशन का कार्य भी किया जाता है। वर्तमान में यहां 5 आचार्य और 2 सहायक आचार्य कार्यरत हैं, जो कि 4 विषयों में स्नातकोत्तर और 3 विषयों से स्नातक स्तरीय पाठ्यक्रमों का अध्ययन–अध्यापन करवाते हैं। विभाग द्वारा इस विश्वविद्यालय के अलावा अन्य विश्वविद्यालयों के छात्र–छात्राओं के लिए 5 सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों में भी अध्ययन की सुविधा दी जा रही है। विभाग द्वारा अब तक बाहर से आने वाले विद्यार्थियों को परियोजना प्रशिक्षण भी पूरे करवाए गए हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् तथा राज्य सरकार द्वारा वित्तपोषी 4 अनुसंधान परियोजनाएँ पूरी की गई हैं। राज्य सरकार, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना और निजी सहभागिता से 8 अनुसंधान परियोजनाएँ संचालित की जा रही हैं। विभाग द्वारा अपनी स्थापना से अब तक सूक्ष्म जैव विज्ञान में 9 चिकित्सा सूक्ष्म जैव विज्ञान स्नातकोत्तर और 14 विद्यावाचस्पति विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया गया है। इनके अतिरिक्त जैव तकनीकी विषय में 6 छात्रों को अधिस्नात्तक स्तर की उपाधि हेतु मार्गदर्शन दिया गया। यहां के विद्यार्थी देश–विदेश के विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानों और पशुपालन विभाग में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। विभाग द्वारा 29–31 दिसम्बर 2010 को "खाद्य सुरक्षा और गरीबी उन्मूलन के लिए पशुधन विकास और जैव विविधिकरण के संरक्षण में जैव प्रौद्योगिकी की भूमिका'' विषय पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर इण्डियन सोसाइटी फॉर वेटरनरी इम्यूनॉलोजी और बायोटेक्नॉलोजी की 17 वीं वार्षिक बैठक की मेजबानी भी की जिसमें देश –विदेश के वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य

राजस्थान के शुष्क क्षेत्र में कांकरेज गायों के दुग्ध उत्पादन प्रदर्शन पर जीवंती परिपूरक का प्रभाव

वर्तमान अनुसन्धान राजस्थान के शुष्क क्षेत्र में दूध देने वाली कांकरेज गायों में गायों के उत्पादन प्रदर्शन में जड़ी–बूटी जीवंती की परिपूरकता द्वारा सुधार की संभावनाओं का आकलन करने के प्रयास में किया गया। इसके अंतर्गत समान ब्यांत समान भार तथा समान दूध उत्पादन वाली 16 कांकरेज गायों का चयन कर उनको समरूप 4 उपचार समूहों में वर्गीकृत किया गया, जिसमें प्रत्येक उपचार समूह में 4 गायें थी। इनमें से एक समूह को नियंत्रित समूह के रूप में रखा गया जिसमे केवल दूध उत्पादन के अनुसार दाना मिश्रण दिया गया तथा कोई जीवंती जड़ चूर्ण परिपूरक नहीं दिया गया। उपचार समूहों टी1, टी2 तथा टी3 समूह की गायों को क्रमशः 50 ग्राम, 100 ग्राम तथा 150 ग्राम जीवंती जड़ चूर्ण परिपूरक प्रतिदिन दाने के साथ दिया गया। जीवंती जड़ चूर्ण की पूरकता अवधि के दौरान दूध उत्पादन तथा वसा नियंत्रित दूध उत्पादन टी1, टी2 तथा टी3 समूहों में नियंत्रित समूह की तुलना में सार्थक अंतर नहीं पाया गया हालाँकि परिपूरकता के दौरान नियंत्रण समूह से टी1 में दूध उत्पादन 16.51 प्रतिशत टी2 में 18.31 प्रतिशत और टी3 में 19.87 प्रतिशत अधिक था तथा जीवंती परिपूरक बंद करने के बाद टी3 समूह की गायों में दूध उत्पादन नियंत्रित तथा टी1 समूह से क्रमशः 21.54 प्रतिशत व 17.39 प्रतिशत अधिक पाया गया, जो कि सार्थक रूप से अधिक था जबकि टी2 समूह की गायों के दूध उत्पादन में 10.38 प्रतिशत अधिक पाया गया। जीवंती परिपूरक दूध उत्पादन प्रदर्शन पर पूरी तरह से अपना प्रभाव डालने के लिए समय लेता है अर्थात जीवंती परिपूरक का प्रभाव धीमी गति से होता है परन्तु ये प्रभाव जीवंती परिपूरक देना बंद करने के बाद भी रहता है। दूध की बिक्री से होने वाली आय टी1 समूह की गायों में सबसे ज्यादा पायी गयी उसके बाद टी2 समूह में तथा सबसे कम टी3 समूह में पायी गयी। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जीवंती चूर्ण दुधारू कांकरेज गायों में परिपूरक के रूप में लाभकारी है तथा इसका प्रयोग दूध उत्पादन तथा दूध से होने वाली आय को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

शोधकर्ताः – मिनाली जैन, मुख्य समादेष्टा :– डॉ बसंत बैस, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर

पशुओं में 'प्रोलेप्स' (अपभ्रंश) रोग और उसकी रोकथाम

''प्रोलेप्स'' मादा पशुओं की बच्चेदानी का एक महत्वपूर्ण रोग है। इस रोग में पशु की बच्चेदानी का कुछ या अधिकांश भाग शरीर से बाहर दिखाई देने लगता है। कभी–कभी प्रोलेप्स के दौरान सम्पूर्ण बच्चेदानी ही शरीर से बाहर आ जाती है। प्रोलेप्स को अपभ्रंश रोग के नाम से भी जाना जाता है। इसे आम बोलचाल में फूल दिखाना या पीछा दिखाना भी कहते हैं। ग्याभिन पशु में प्रोलेप्स की समस्या पांच से छह माह के पश्चात् दिखने लगती है। सामान्यतया प्रोलेप्स प्रारंभ में गेंद के आकार के समान दिखता है जो कि उपचार के अभाव में धीरे–धीरे बढ़ने लगता है। प्रोलेप्स रोग में न केवल मादा पशु बल्कि उसके बच्चे के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है। साथ ही उस ब्यांत में पशु का दुग्ध उत्पादन भी घट जाता है। पशु की प्रजनन क्षमता कम हो जाती है और पशु बार–बार फिरने लगता है। कभी–कभी प्रसव के दौरान होने वाले प्रोलेप्स से पशु के शरीर में जहर फैलने से उसकी मृत्यु हो जाती है जिससे पशुपालक को अत्यधिक आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ता है। पशुओं में होने वाले प्रोलेप्स को दो प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है:–

पूर्ण प्रोलेप्स

इस प्रकार का प्रोलेप्स पशु के ब्याते समय या प्रसव के समय होता है। यह सर्वाधिक खतरनाक प्रकार का प्रोलेप्स होता है जिसमें तत्काल उपचार न मिलने पर सदमें व अत्याधिक रक्तस्त्राव की वजह से पशु की मृत्यु हो जाती है। इस प्रोलेप्स में पशु की बच्चेदानी का सम्पूर्ण भाग शरीर से बाहर बाहर आ जाता है और प्रोलेप्स वाले भाग का आकार बड़ा होने के कारण बच्चेदानी को वापस अंदर डालना अत्याधिक कठिन होता है। पशु दर्द और सूजन की वजह से अत्याधिक तनाव में आ जाता है तथा और अधिक जोर लगाने लगता है। सामान्य से बड़ा बच्चा, विकृत बच्चा तथा बच्चेदानी में बच्चे की असामान्य स्थिति होना पूर्ण प्रोलेप्स की संभावना को बढ़ाता है। अप्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा बच्चे को गलत तरीके से बाहर खींचने से भी इसकी संभावना बढ़ जाती है। गर्भावस्था के दौरान बच्चेदानी में संक्रमण होना भी इसका एक मुख्य कारण है।

अपूर्ण प्रोलेप्स

इस प्रकार के प्रोलेप्स में बच्चेदानी का कुछ भाग ही शरीर से बाहर आता है। यद्यपि इसमें पशु की मृत्यु का खतरा कम होता है परंतु पशु की उत्पादकता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अपूर्ण प्रोलेप्स गर्भावस्था के दौरान अथवा प्रसव के बाद देखने को मिलता है। गर्भावस्था के दौरान होने वाला प्रोलेप्स सामान्यतया गर्भ के पांचवें से छठे माह से होता है। इसके मुख्य कारण हैं :–

- अधिक दूध देने वाले पशुओं में खनिज लवण विशेषतः कैल्शियम व फॉस्फोरस की कमी तथा विभिन्न पोषक तत्वों के असंतुलन से बच्चेदानी की संकुचनशीलता में कमी हो जाती है
- पशु को संक्रमित पाड़े अथवा सांड से ग्याभन कराने पर बच्चेदानी में सूजन व मवाद से प्रोलेप्स हो जाता है
- गर्मी के मौसम में अधिक मात्रा में ऊर्जा युक्त आहार जैसे अनाज खिलाने पर
- ईस्ट्रोजेनिक प्रभाव वाले चारा जैसे लाल क्लोवर खिलाने पर
- दूध निकालने व पावसने के लिए ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन का उपयोग इसका मुख्य कारण हैं
- गर्भावस्था के दौरान प्रोजेस्ट्रोन हार्मोन की कमी से प्रोलेप्स होने की संभावना बढ़ जाती है। प्रथम बार गर्भधारण करने वाले पशुओं में यह समस्या ज्यादा देखने को मिलती है
- प्रोलेप्स वाले भाग पर मिट्टी व अपशिष्ट लगने पर यह समस्या ओर भी गंभीर हो जाती है

प्रसव के पश्चात होने वाले प्रोलेप्स का मुख्य कारण संक्रमण होता हैं। पशु के ब्यांहने के बाद उचित सावधानी न रखने से बच्चेदानी में संक्रमण हो जाता हैं। गंदे हाथों से बच्चेदानी को छूना, साफ सफाई का अभाव, बच्चेदानी मे जेर रह जाने से प्रोलेप्स की संभावना बढ़ जाती है। बच्चेदानी से पूर्ण मैला अथवा छटॉव न लेने की दशा में बच्चेदानी अपने सामान्य आकार में नहीं आ पाती है तथा संक्रमण से प्रोलेप्स होने की आशंका बढ़ जाती है। संक्रमण से बच्चेदानी में मवाद बन जाती है तथा सूजन आ जाती है और पशु अक्सर पीछे की ओर जोर लगाता रहता है।

प्रोलेप्स की रोकथाम

उचित प्रबंधन एवं रखरखाव से प्रोलेप्स को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है :–

पशु आहार प्रबंधन

- पशु आहार में रोजाना 50–100 ग्राम कैल्शियम युक्त खनिज लवण मिश्रण मिलाना चाहिए
- पशु के आहार में सूखे चारे की मात्रा कम कर देनी चाहिए तथा हरा चारा ज्यादा मात्रा में देना चाहिए। एक बार में पूरा चारा देने के बजाय कम मात्रा में एक से ज्यादा बार में चारा खिलाना चाहिए
- गर्म मौसम में अधिक ऊर्जा युक्त अनाज का उपयोग सीमित रखना चाहिए
- पशु की चराई सुबह व शाम को करनी चाहिए

सामान्य प्रबंधन

- पशु को संक्रमित पाड़े अथवा सांड से ग्याभन नहीं कराना चाहिए
- प्रोलेप्स वाले पशु को बांधने का स्थान पीछे से 3–6 इन्च उठा हुआ होना चाहिए
- दूध निकालने के लिए ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन का उपयोग नहीं करना चाहिए
- पशु को छायादार स्थान पर बांधना चाहिए
- पशु को नियमित रुप से घुमाने से प्रोलेप्स की संभावना कम होती है
- प्रोलेप्स वाले भाग का आवारा पशुओं तथा पक्षियों से बचाव करना चाहिए

रोग प्रबंधन

- रोग होने पर प्रोलेप्स वाले भाग को लाल दवा के पानी से साफ कर देना चाहिए व पशु को खड़ा कर देना चाहिए
- संक्रमित हाथ तथा वस्तुओं जैसे चप्पल, कपड़ा आदि से प्रोलेप्स वाले भाग को नहीं छूना चाहिए
- बार–बार प्रोलेप्स होने पर नरम रस्सी की कैचीं अथवा ऐड़ी बांध देनी चाहिए और समय रहते पशु चिकित्सक से उपचार कराना चाहिए।

डॉ विजय कुमार अग्रवाल एवं डॉ सोनल ठाकुर (मो.9414553990)
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर

भेड़–बकरियों में क्लेमाइडोफीला संक्रमण द्वारा गर्भपात

भेड़–बकरियों में क्लेमाइडोफीला संक्रमण एक बहुत ही गम्भीर समस्या है, जिससे पशु की मृत्यु तो नहीं होती लेकिन गर्भपात के कारण उत्पादन में कमी से काफी आर्थिक हानि होती है। इस रोग से ग्रसित भेड़–बकरियों में गर्भावस्था के अंतिम 15–20 दिन में गर्भपात होता है। कई बार गर्भपात न होकर कमजोर बच्चे पैदा होते हैं। इसके अतिरिक्त कई परिस्थितियों में गर्भ के अंदर ही बच्चा मर जाता है और गर्भावस्था पूरी होने के बाद भी पेट के अंदर रह जाता है, जिससे जहर फैलने से भेड़–बकरी की मौत भी हो सकती है। यदि कमजोर बच्चा पैदा हो रहा है तो सामान्यतया: वह अगले 2–3 दिन में ही मौत का शिकार हो जाता है। गर्भपात के समय निकली हुई जैर में काफी सूजन होती है। सामान्यत: एक बार गर्भपात होने के बाद ऐसे भेड़–बकरी में रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है और भविष्य में गर्भपात नहीं होता है। लेकिन कुछ भेड़–बकरियों में बार बार गर्भपात हो सकता है। इस रोग के संक्रमण से हुए गर्भपात के बाद पशु सामान्य रूप से गर्भधारण कर लेता है। यह रोग भेड़–बकरियों के अतिरिक्त गौवंश, सूअर, घोड़े एवं कुछ अन्य जंगली पशुओं में भी हो सकता है। पशुपालकों को, गर्भपात होने के बाद गिरी हुई जैर को पहले सावधानी से उठाना चाहिए, क्योंकि यह रोग मनुष्य में भी फैल सकता है।

बचाव :–

गिरे हुए गर्भ, जैर व स्त्राव को बहुत सावधानी से उठाकर दूर स्थान पर जमीन में गाड़ देना चाहिए। गर्भपात होने के स्थान को रोगाणुमुक्त करने के लिए एन्टीसेप्टिक घोल इत्यादि से सफाई करना अति आवश्यक है। इस रोग के कीटाणु दूध के द्वारा भी संक्रमण फैला सकते हैं। अत: दूध को हमेशा अच्छी तरह उबाल कर ही प्रयोग करना चाहिए। वर्तमान में इस रोग के टीकाकरण की सुविधा नहीं है। अत: इस रोग से बचाव द्वारा ही पशुपालक अपने पशुओं को रोग रहित रख सकते हैं। नये पशु खरीदते समय पशुपालक को यह ध्यान रखना चाहिए कि इनमें पहले कभी गर्भपात तो नहीं हुआ है। यह रोग सामान्य तौर पर सितम्बर, अक्टूबर माह में ज्यादा देखने में आता है। अत: यदि पशु–झुंड में ज्यादा गर्भपात हो रहा है तो यह रोग हो सकता है। इस अवस्था में निकटतम पशुचिकित्सक से तुरंत सम्पर्क कर उपचार करवाना चाहिए।

– प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

पशुपालन में परंपरागत ज्ञान की उपयोगिता

भारत देश प्राचीनकाल से ही चिकित्सा की पारंपरिक पद्धतियों जैसे आर्युवेदिक, यूनानी व होम्योपैथी आदि का धनी रहा है साथ ही हमारी प्राचीन कृषि व पशुपालन पद्धतियां भी यही प्रदर्शित करती है कि हमारे कृषक व पशुपालक सभी पारंपरिक विधियों में विश्वास करते आये हैं। परंपरागत ज्ञान सूचनाओं या ज्ञान का एक ऐसा खजाना है जो पीढ़ी दर पीढ़ी बोलकर (मुख द्वारा) संचारित किया जाता है। यह एक अद्वितीय विशिष्ट, परंपरागत एवं स्थानीय ज्ञान है जो कि एक स्थानीय जगह पर, लोगों के आस–पास विकसित होता है। कहा जाता है कि ''जब एक वृद्ध मनुष्य की मृत्यु हो जाती है तो एक पूरा पुस्तकालय समाप्त हो जाता है। यह कथन परंपरागत ज्ञान की महत्ता को बताता है। ग्रामीण किसान के पास उनकी रोजमर्रा की जिंदगी और अपने आसपास के वातावरण से एक अद्वितीय ज्ञान होता है। शताब्दियों से इन्होंनें कठिन परिस्थितियों में रहकर खेती करना और अपने आपको वातावरण के अनुकूल ढ़ालना सीखा है, वे जानते हैं कि कौनसी फसल, कब बोनी है, कब काटनी है, कौनसा पौधा जहरीला है, कौनसा पौधा दवाई के रूप में काम आ सकता है, कैसे बीमारियों से बचने में मददगार हो सकता है, यह सब भी उनके ज्ञानकोष में रहता है।

परंपरागत ज्ञान विभिन्न क्षेत्रों जैसे कृषि, शिक्षा, खाद्य पदार्थों को बनाना, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में उपयोगी होता है। यह ज्ञान किसान के अनुभव से उत्पन्न होता है, और जिसका उपयोग किसानों की कई समस्याओं को सुलझाने में किया जाता है। हमारा देश इन अनुभवों का खजाना है, बस कमी है तो इन अनुभवों को कागज पर उतारने की है। अब इनको पहचानने और इन्हें प्रमाणित करने का समय आ गया है। जिससे हम इस ज्ञान के भंडार को सुरक्षित रख सकें, जिनके द्वारा हम इन्हें वैज्ञानिक आधार पर प्रमाणित कर सकते हैं, ये महत्वपूर्ण उपाय हैं–

क्रमवार कार्यवाही	तरीका
कागज पर लेना	सर्वे / आर.आर.ए. / आर.पी.ए. / निगरानी करके
अनुभवों, परंपरागत ज्ञान का वैज्ञानिक प्रमाण	सर्वे / प्रयोगशाला विश्लेषण / फार्म पर प्रयोग
गुणवत्ता में सुधार ताकि ज्यादा से ज्यादा प्रसार हो।	अनुसंधान / प्रयोगशाला अध्ययन
गुणवत्ता युक्त व मान्य परंपरागत ज्ञान को पेटेन्ट कराना	परंपरागत ज्ञान को सुरक्षित करके कानूनन मान्यता दिलवाना, स्थानीय लोगो को उसका मालिकाना अधिकार दिलाना
गुणवत्ता युक्त व मान्य परंपरागत ज्ञान को बढ़ावा देना	स्थानीय लोगों व मीडिया को शामिल करना, प्रसारित करना, पुरस्कार देना आदि।

सभी परंपरागत ज्ञान वैज्ञानिक आधार पर मान्य नहीं होते, उनमें से कई धार्मिक रूप से वर्जित और कई सांस्कृतिक लोकाचार भी होते हैं, इसलिए पहले उन्हें वैज्ञानिक आधार पर सिद्ध कर लेना चाहिए, जिसके लिए कुछ कसौटियाँ निम्न प्रकार से है जैसे:–

1. प्रभावोत्पादकता / क्षमता
2. किफायती
3. उपलब्धता
4. जटिलता

5. सांस्कृतिक रूप से वैध
6. संप्रदाय विशेष पर प्रभाव
7. पर्यावरण के प्रति सचेत
8. बाधाएँ

एक बार परंपरागत ज्ञान मान्य और गुणवत्ता युक्त हो जाये तो इसे सुरक्षित करके इसका लाभ सभी तक पहुंचाया जाना चाहिए। पशुपालन में प्रयोग किये जाने वाले कुछ ऐसे परंपरागत ज्ञान जो कि पशुपालक द्वारा प्रयोग में लिये जा रहे हैं:

1. नीम की पत्तियाँ आफरे को दूर करती है
2. कब्ज की समस्या में 80 ग्राम हींग को 500 ग्राम खाने के तेल में मिलाकर देने से कब्ज से राहत मिलती है।
3. बछड़ों में पेट के कीड़े मारने के लिये 20–25 मिली. नीम का तेल प्रयोग किया जाता है।
4. नीम की पत्तियों व हल्दी पाउडर को मलहम बनाकर घावों पर व चर्म रोगों में लगाने से ये ठीक हो जाते हैं।
5. आफरे में 30 मिली. तारपीन का तेल 500 मिली. मीठा तेल, 100 ग्राम नमक व 1 ग्राम हींग का प्रयोग लाभकारी होता है।
6. ब्याने के बाद गुड़ व अजवायन खिलाने से जर जल्दी निकल जाती है।
7. दूध बढ़ाने व उतारने हेतु सतावरी खिलाई जाती है।

अतः हमें हमारे परंपरागत ज्ञान को पहचान कर उसको संरक्षित करने की अति महत्वपूर्ण आवश्यकता है ताकि हमारा परंपरागत ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित हो सके।

डॉ. दिनेश जैन (मो. 9413300048), डॉ. तारा बोथरा, व डॉ. राजेश नेहरा, राजुवास, बीकानेर

काजरी जोधपुर के किसान मेले में राजुवास की प्रदर्शनी को मिला पहला पुरस्कार

केन्द्रीय शुष्क अनुसंधान संस्थान जोधपुर द्वारा 24 सितम्बर, 2015 को आयोजित 46वें किसान मेले में वेटरनरी विश्वविद्यालय की तकनीकी स्टॉल प्रदर्शनी को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। मेले के मुख्य अतिथि लूणी (जोधपुर) के विधायक श्री जोगाराम पटेल ने राजुवास प्रदर्शनी को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया। राजुवास ने प्रदर्शनी में पशुचिकित्सा की आधुनिक तकनीक व नवाचारों तथा पशुपालन के वैज्ञानिक तौर–तरीकों को मॉडल, चार्टस, पैनल्स, रंगीन चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों और नवाचारों को राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले कार्यक्रमों व मेलों में मान्यता मिल रही है और राजुवास ने पिछले दो–तीन वर्षों में अनेकों राष्ट्रीय प्रदर्शनी और कृषक मेलों में भाग लेकर पुरस्कार जीते हैं। जोधपुर में आयोजित प्रदर्शनी में स्वदेशी गौवंश के संवर्द्धन व उन्नयन में राजुवास के प्रयास, ऊंटों के टूटे जबड़ों को जोड़ने की तकनीक, पशु आहार एवं चारे की ईंटो के अलावा पौष्टिक पशु आहार निर्माण, चारा संरक्षण की साइलो बैग तकनीक और एमू फार्मिंग को किसानों और पशुपालकों ने पसंद कर सराहना की। प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि प्रदर्शनी में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संस्थानों, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थानों की 50 प्रदर्शनी स्टॉल शामिल थी।

सफलता की कहानी

युवा नरेश खुशनसीब लोगों में शामिल हुआ

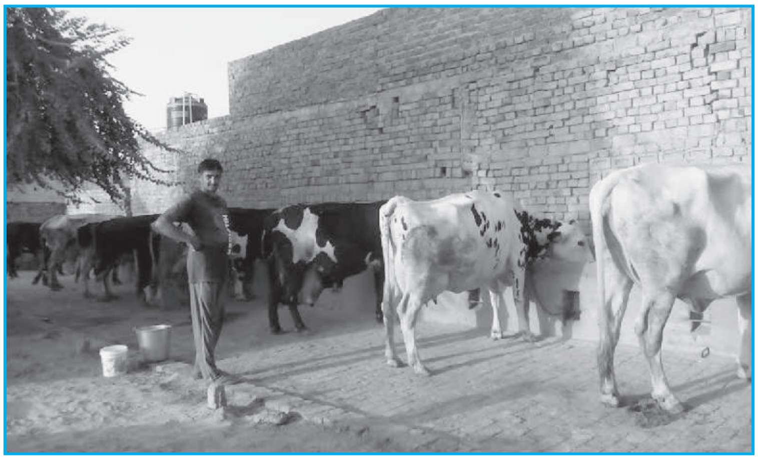

हजारों युवा रोजगार या नौकरी की तलाश में इधर–उधर भटक रहे हैं, लेकिन हनुमानगढ के युवा नरेश ने बिना समय गंवायें समझदारी का परिचय देते हुए स्वंय का ही कोई व्यवसाय शुरू करने की ठान ली। साधारण से किसान उनके पिता महावीर सहारण ने अपने पुत्र की हौसला आफजाई की। किसान परिवार और ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले नरेश ने अपने परिवार की आर्थिक स्थिति के मद्देनजर दूध की मांग को देखते हुए पशुपालन को व्यवसाय के लिए चुना। पशुपालन में भी एक गाय से डेयरी व्यवसाय की शुरूआत की। धीरे–धीरे दुधारू गायों में इजाफा किया और कमाई के लिहाज से बड़े सपने न देखकर आहिस्ता– आहिस्ता अपने व्यवसाय को चमकाया। नरेश को डेयरी व्यवसाय को शुरू करने के लिए किसी की मदद या घरवालों को भी कोई परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा। उसकी दूरदर्शिता और मेहनत रंग लाई और आज वह 11 गायों और 5 बछड़ियों का मालिक है। गौवंश के लालन–पालन में भी घर का खेत होने के कारण कोई परेशानी नहीं हुई। अपने व्यवसाय की देखभाल स्वंय करते हैं जिससें उनकी पत्नी भी पूरा सहयोग करती है। इन गायों से प्रतिदिन 115 किलोग्राम दूध का उत्पादन ले रहे हैं। दूध की बिक्री हाथों–हाथ हो जाती है। इस व्यवसाय से विशुद्ध आय प्राप्त करके आराम से जीवन बसर कर रहे हैं। वीयूटीआरसी, सूरतगढ़ द्वारा समय समय पर आयोजित प्रशिक्षण शिविरों से मार्गदर्शन प्राप्त कर टीकाकरण, कृमिनाशक दवाओं और अन्य प्रकार की देखभाल स्वंय कर लेते हैं। स्वच्छ दूध उत्पादन उनकी डेयरी की पहचान बन गई हैं। पढ़े–लिखे बेरोजगार युवाओं के लिए नरेश एक प्रेरणा के स्त्रोत बने हैं। वह उन खुशनसीब लोगों में शामिल हो गया जिनके चेहरे पर आत्म विश्वास, निरंतर आगे बढ़ने का जज्बा और अपने पैरों पर खड़े होने का सुकून है। सम्पर्क– नरेश सहारण (मो.8561989399), हनुमानगढ़

निदेशक की कलम से...

सर्दियों में पशुओं की विशेष देखभाल की जरूरत

प्रिय पशुपालक और किसान भाईयों ।

मौसम में बदलाव की प्रक्रिया शुरू हो गई है। सर्दी के आगमन के साथ ही पशुओं की सार संभाल पर विशेष ध्यान देने की जरूरत रहेगी। इसके लिए आपको अभी से ही तैयारी शुरू करनी है। प्रदेश में सर्दी का प्रकोप शीतलहर, पाला पड़ने के साथ ही तापक्रम शून्य डिग्री सेल्सियस तक पहुँचना शामिल है। शीतकाल में होने वाली पशु बीमारियों में न्यूमोनिया, गलघोंटू, मुंहपका–खुरपका, माता रोग जैसी कई बीमारियां संभव है। इनका प्रकोप होने पर तुरंत पशु चिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए। कुछ सावधानियां आपको अपने स्तर पर भी करनी चाहिए। पशुओं के आवास स्थल को साफ–सुथरा और कुछ ऊँचाई पर रखना चाहिए जिससे उन्हें धूप पर्याप्त मात्रा में मिल सके। उनके आवास स्थल को सीलन से मुक्त रखा जाना चाहिए। क्योंकि फर्श गीला रहने से रोग कारक जीवाणुओं की संख्या बढ़ती है एवं श्वसन संबंधी बीमारियां होने की संभावना अधिक हो जाती है। इससे बचने के लिए पशु बाड़े में रोज या एक दिन बाद घास/भूसे के बिछावन को बदल देना चाहिए। रात के समय ठंडी हवाओं से बचाव के लिए पल्ली इत्यादि का प्रयोग करें। बिना आवश्यकता नहीं नहलायें। मुर्गी फार्म में विशेषतया चूजों को रात्री में ठंड से बचने के लिए पुख्ता उपाय करें। पशु के सुस्त होने, तेज बुखार होने, उत्पादन में कमी होने या चारा–पानी बंद होने की स्थिति में पशु संक्रमित हो सकता है। इन लक्षणों के दिखाई देने पर ऐसे पशु को तुरंत प्रभाव से स्वस्थ पशुओं से अलग करके पशु चिकित्सक से संपर्क करें। पशुओं को सर्दी के समय उत्तम किस्म के चारे तथा दाने साथ–साथ गुनगुने पानी में अजवायन तथा गुड़ मिलाकर देने से दूध उत्पादन पर प्रतिकूल असर नहीं होता। समय पर टीकाकरण करवाने से पशुओं को आकस्मिक रोगों से बचाया जा सकता है। **–प्रो. राजेश कुमार धूड़िया,** प्रसार शिक्षा निदेशक (मो. 9414283388)

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **अक्टूबर 2015** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठायें।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1.	प्रो.(डॉ.) कर्नल ए.के.गहलोत, 9414138211 कुलपति, राजुवास, बीकानेर	विश्वविद्यालय द्वारा पशुचिकित्सा के क्षेत्र में प्रदान की जा रही अत्याधुनिक सेवाएं	01.10.2015
2.	प्रो. जी.एस. मनोहर 9413659310 अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर शिक्षा, राजुवास, बीकानेर	पशुओं में खून के परजीवीयों से होने वाले रोग एवं उनकी रोकथाम	08.10.2015
3.	प्रो. आर. के. सिंह 9414430084 प्रभारी अधिकारी, पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीछवाल	देशी गौवंश थारपारकर के उन्नयन एवं सवंर्द्धन में विश्वविद्यालय के प्रयास	15.10.2015
4.	डॉ. नजीर मोहम्मद 8432117112 अपेक्स सेंटर, राजुवास, बीकानेर	सर्दियों में होने वाले पशुओं के प्रमुख रोग, उनके बचाव के उपाय एवं प्रबंधन	22.10.2015
5.	प्रो. राधेश्याम आर्य 9799221555 पशु पोषण विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	पशुओं में आहार प्रबंधन से अधिक उत्पादन	29.10.2015

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : अक्टूबर, 2015

बुक पोस्ट   भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया